ऑडियो कैसेट नं .203 **प्रातः क्लास** 6.6.86

ओमशान्ति। आत्मा-अभिमानी हो करके बैठे हो? अपने आपसे पूछो। हरेक बात अपने आपसे पूछनी पड़ती है। बाप युक्ति बतलाते हैं कि अपने से पूछो -आत्मा-अभिमानी होकर बैठे हो? बाप को याद करते हैं? क्योंकि यह है तुम्हारी रूहानी सेना। उस सेना में तो हमेशा जवान ही होते हैं। इस सेना में जवान 14-15 वर्ष के भी हैं तो 90 वर्ष के बूढ़े भी बैठे हैं, तो छोटे-2 बच्चे भी हैं। यह सेना है माया पर जीत पाने के लिए। हरेक को माया पर जीत पाकर बाप से बेहद का वर्सा पाना है; क्योंकि माया बहुत दुस्तर है। बाप समझाते हैं, बच्चे स्वयं भी जानते हैं -माया बड़ी प्रबल है।

हरेक कर्मेन्द्रिय धोखा बहुत देती है। सबसे पहले जास्ती धोखा देने वाली कौन-सी इन्द्रिय है? आँखें ही सबसे जास्ती धोखा देती हैं। अपनी स्त्री होते हुए भी दूसरी कोई खूबसूरत देखेंगे तो झट वह खींचेगी। आँखें बड़ा धोखा देती हैं। कौन-सी आँखें -चर्मचक्षु वाली आँखें या अन्तर की आँख? क्योंकि मुरली में बताया है - •"चर्मचक्षुओं की है, चर्म माना चमड़ी, इन चर्मचक्षुओं की है क्रिमिनल आई और अन्तर चक्षु की है सिविल आई।" (मु .2.3.68 पृ.3 मध्यांत) तो कौन-सी आँख धोखा देती है? चर्मचक्षु धोखा देती है। जो धोखा देने वाला अंग है, उसका संग करना चाहिए? जो सबसे जास्ती धोखा देने वाली इन्द्रिय है, उस अंग का संग करेंगे, अंग से अंग लगाकर बैठेंगे, तो रिज़ल्ट क्या होगी? जबकि मुरली में क्या बोला है?-•"तुम बच्चे याद में बैठते हो, तो अंग से अंग नहीं लगना चाहिए।" (मु.17.3.74 पृ.2 मध्यादि) तो आँख शरीर का अंग नहीं है क्या? अंग है ना !तो बाबा ने किसी मुरली में ये बात नहीं बताई कि कन्याएँ-माताएँ बैठ करके पुरुषों से आँख से आँख लड़ाएँ। क्यों? क्योंकि इस पतित दुनियाँ में सबकी दृष्टि कैसी है? पतित दृष्टि है। इस पतित दुनियाँ में सब पतित, विकारी हैं; कोई भी निर्विकारी नहीं। ए टू ज़ेड। माना? 'ए' कौन? अलफ से अन्त तक सब विकारी हैं। 'अलफ' कौन? प्रजापिता (आदम) से ले करके अंतिम 500 करोड़वीं मनुष्य-आत्मा तक, सब विकारी हैं। तो किससे दृष्टि लेनी चाहिए? हाँ, अगर ये निश्चय है कि शिवबाबा (किसी मुकर्रर तन में) आया हुआ है, तो शिवबाबा से दृष्टि लेनी है। जैसे बाबा मुरली में बोलते हैं - •"किसकी गोद में आए हो -इस ब्रह्मा की गोद में आए हो या शिवबाबा की गोद में आए हो? अगर ये समझेंगे कि ब्रह्मा की गोद में आए हैं, तो पतित हो पड़ेंगे।" (मु.ता.15.1.67 पृ.3 अंत) तो ऐसे ही जो सर्वशक्तिमान बाप है, उसकी दृष्टि से सृष्टि निर्विकारी बनेगी; पतित मनुष्य-आत्माओं की दृष्टि से सृष्टि निर्विकारी नहीं बन सकती। हाँ, ये बोला है -'आठ की सिविल आई बनेगी;' लेकिन अभी तो नहीं कहा जा सकता कि उन आठ की भी सिविल आई बनी है। जब बनेगी, तो जो सिविल आई बनेंगे, वो दूसरों को भी सिविल आई बनाय सकेंगे। तो आँखें बड़ा धोखा देती हैं।

बच्चों को समझाया जाता है- सदैव बुद्धि से यह समझो कि हम ब्रह्माकुमार-कुमारी भाई-बहन हैं। किसके बच्चे हैं? प्रजापिता ब्रह्मा के हम बच्चे हैं, आपस में भाई-बहन हैं। इसमें भी माया बहुत गुप्त धोखा देती है। भाई-बहन समझने में भी क्रिमिनल दृष्टि जाती है; इसलिए यह चार्ट में लिखना चाहिए कि सारा दिन में हमारी इतनी बार क्रिमिनल आई हुई। आज सारे दिन में कौन-सी कर्मेन्द्रिय ने हमको धोखा दिया? सबसे जास्ती दुश्मन हैं यह आँखें। तो जो जास्ती दुश्मन हो, उसको क्या करना चाहिए? क्या कोशिश करनी चाहिए? उसको जास्ती कण्ट्रोल में रखने की कोशिश करनी चाहिए। तो यह लिखना चाहिए -फलानी को देखा, हमारी दृष्टि गई। सूरदास का भी मिसाल है ना -अपनी आँखें निकाल दीं। क्या मतलब! मिसाल सब हैं कहाँ के? सूरदास ने अपनी आँखें निकाल लीं, तो क्या हम भी अपनी आँखें निकाल दें? आँख निकालने की बात नहीं है; ऐसे भी नहीं कि किसी से बात करते हैं तो उसके पेट की तरफ देखेंगे, इतना भी कायर नहीं बनना है; लेकिन क्या करना है? देखते हुए भी न देखना। हम अपने-आप को आत्मिक दृष्टि में रखकर, आत्मा को देखते हैं; अगर किसी से बात करनी पड़ती भी है तो। अपनी जाँच करेंगे, तो आँखें धोखा जास्ती देती हैं -पता चलेगा। भल सर्विस भी करते हैं; परन्तु आँखें बहुत धोखा देती हैं। इस दुश्मन की पूरी जाँच रखनी है; नहीं तो हमारे पद को भ्रष्ट कर देंगे। जो समझदार बच्चे हैं, उनको अपने पास डायरी में नोट रखना चाहिए -फलाने को देखा तो हमारी दृष्टि गई, फिर अपने को आपे ही सज़ा दो। भक्तिमार्ग में भी पूजा के टाइम बुद्धि और-2 तरफ भागती है, तो अपने को चुटकी काटते हैं। तो जब कोई स्त्री आदि सामने आती है, तो किनारा कर लेना चाहिए, खड़ा होकर देखना नहीं चाहिए।

आँखें बहुत धोखा देने वाली हैं; इसलिए संन्यासी लोग आँखें बंद करके बैठते हैं। स्त्री को पिछाड़ी में, पुरुष को आगे में बिठाते हैं। क्यों? ऐसा क्यों करते हैं? स्त्रियों को अगाड़ी बिठाएँ और पुरुषों को पिछाड़ी बिठाएँ, तो क्या होगा? (किसी ने कुछ कहा...)- किसकी आँखें धोखा खाएँगी? (किसी ने कहा-पुरुषों की) पुरुषों की ! इससे क्या साबित हुआ कि संन्यासी भी ये बात जानते हैं कि पुरुष जास्ती विकारी होते हैं; स्त्री में फिर भी लज्जा रहती है, अपने को कण्ट्रोल करती है। मुरली में भी बोला है - •"पुरुष सब दुर्योधन-दुःशासन हैं।" (मु.ता.17.6.64 पृ.1 मध्य) कई ऐसे भी होते हैं, जो स्त्री को बिल्कुल देखते नहीं हैं।

तुम बच्चों को तो बहुत मेहनत करनी है। विश्व का राज्य-भाग लेना कोई कम बात थोड़े ही है। वे लोग तो करके 10-12-20 हज़ार, एक-दो लाख, करोड़ इकट्ठा करेंगे और खलास हो जाएँगे। तुम बच्चों को तो अविनाशी वर्सा मिलता है। कौन-सा? ज्ञान-रत्नों (का)। सब प्राप्ति हो जाती है। ऐसी कोई चीज़ नहीं रहती, जिसकी प्राप्ति के लिए माथा मारना पड़े; इसलिए बोला -"ये ज्ञान-रत्न ही स्थूल रत्न हो जावेंगे।" (मु.ता.25.2.68 पृ.1 मध्यांत) इतनी पावर है इन ज्ञान-रत्नों में।

तो कुछ माथा नहीं मारना पड़ेगा। कलियुग अंत और सतयुग आदि का रात-दिन का फर्क है! यहाँ तो कुछ नहीं है।

अभी तुम्हारा यह पुरुषोत्तम संगमयुग है। 'पुरुषोत्तम' अक्षर ज़रूर लिखना है। ज़रूर क्यों लिखना है? एक है सामान्य संगमयुग और दूसरा है पुरुषोत्तम संगमयुग। जिस संगमयुग में पुरुषों में उत्तम-2 आत्माएँ प्रत्यक्ष हों। उत्तम-ते-उत्तम नम्बरवार कौन-2 हैं, वो माला प्रत्यक्ष होने का टाइम है -पुरुषोत्तम संगमयुग।

मनुष्य से देवता बनते हो, तुम अभी ब्राह्मण हो, कल फिर देवता बनने वाले हो। नर्कवासी को स्वर्गवासी बनना है। यह समझकर तुम पुरुषार्थ करते हो। मनुष्य तो बिल्कुल ही घोर अंधियारे में हैं। बहुत ही हैं जो स्वर्ग को देख नहीं सकेंगे। क्या कहा? असली पुरुषार्थ क्या है? जीते जी स्वर्ग को देखना इन आँखों से। अगर यहाँ आँखें क्रिमिनल आई बनती रहीं और दूसरों की क्रिमिनल आई हम बनाते रहें, ऐसी एक्ट करते रहें योग के नाम पर, आँखों से भी भोग होता है, तो इन आँखों से स्वर्ग नहीं देख सकेंगे।

बाप कहते हैं -बच्चे, तुम्हारा धर्म बहुत सुख देने वाला है। क्यों? हमारे धर्म में ऐसी क्या खास बात? हमारे धर्म का ये लक्ष्य है कि वहाँ स्वर्ग में कृष्ण की दृष्टि राधा में ही डूबेगी, राधा की दृष्टि कृष्ण में ही डूबेगी, दृष्टि मात्र से भी व्यभिचारी नहीं बनेंगे, अव्यभिचारी दृष्टि होगी। तो प्रैक्टिस कहाँ करनी पड़े? यहाँ संगमयुग पर ये प्रैक्टिस करनी पड़े -मेरा तो एक शिवबाबा, दूसरा न कोई। जिनकी ये अव्यभिचारीपने की प्रैक्टिस पक्की होगी, वही सतयुग में जा करके सिविल आई वाले देवता बन सकेंगे; इसलिए गायन है, सीता, सावित्री का । क्या गायन है? परपुरुष के सामने आँख उठा करके भी नहीं देखा। उसी भारत पर एक ऐसी राहु की दशा चढ़ जाती है, जो योग के नाम पर बाबा की मुरली के बरखिलाफ कैसी भोग-लीला चलाई जाती है! स्त्री-पुरुष बैठ करके एक-दूसरे को लगातार दृष्टि दें, इससे सृष्टि और वायुमण्डल सुधर नहीं सकता। अंजाम क्या होगा? और ही बिगड़ता चला जाएगा। बजाए स्वर्ग बनने के क्या होगा? और ही नर्क बनता जाएगा, वायब्रेशन भी खराब होंगे और कर्मेन्द्रियाँ भी भ्रष्ट हो सकती हैं। हाँ, नम्बरवार निकलेंगे तो ज़रूर, जो बाबा की मुरली को फॉलो करने वाले होंगे; क्योंकि बाबा ने किसी मुरली में ऐसा नहीं कहा, बाबा ने तो और इसके लिए उल्टा कहा • ये ब्रह्मा के तन में, ब्रह्मा कोई दृष्टि देने वाला नहीं है। दृष्टि देने वाला कौन है? शिवबाबा। • मैं तुम बच्चों को सकाश देता हूँ, तुम तो ऐसा नहीं करेंगे।"(मु॰ता॰12.4.68, 3.5.69 पृ॰4 अंत) ऐसे-2 महावाक्यों से क्लीयर हो जाता है कि मनुष्य, मनुष्य को दृष्टि देने का अधिकारी नहीं है। हाँ, क्लास में चेकिंग करने के लिए कोई टीचर बैठता है, कोई सोता तो नहीं है, कोई गड़बड़ तो नहीं करता है, वो बात दूसरी है। बाकी इस लक्ष्य से बैठना कि सामने बैठने वाले की दृष्टि से हम पावन बन जाएँगे, ये लक्ष्य ठीक नहीं; क्योंकि बाप कहते हैं -तुम्हारा धर्म बहुत सुख देने

वाला है; क्योंकि इस धर्म की विशेषता है कि इसमें इन्द्रियाँ कैसी बनेंगी? श्रेष्ठाचारी ही नहीं, अव्यभिचारी।

द्वापरयुग जब शुरू होता है, तो पहला-2 पतन कहाँ से शुरू होता है? देवताओं में तो अव्यभिचारी स्टेज होती है इन्द्रियों की; लेकिन जो इब्राहीम आता है, आज से 2500 वर्ष पहले आया, उसकी बुद्धि में ये बात नहीं है, कि कोई ऐसी दुनियाँ भी होती है, जहाँ इन्द्रियाँ अव्यभिचारी होती हैं, एक में ही रमण करने वाली होती हैं। उनकी बुद्धि में तो ये है कि हम जितना व्यभिचार बढ़ाएँगे उतनी हमारी जनरेशन बढ़ेगी; नहीं तो बढ़ेगी कहाँ से !तो वो हैं व्यभिचार फैलाने वाली दुनियाँ और हमारा धर्म विशेष है। मनुष्यों को थोड़े ही कुछ पता है। भारतवासी भी भूल गए हैं कि हैविन क्या चीज़ है। क्रिश्चियन लोग भी खुद कहते हैं -हैविन था। इन लक्ष्मी-नारायण को 'गॉड-गॉडेज़' कहते हैं ना! तो ज़रूर गॉड ही ऐसा बनाएँगे।

क्रिश्चियन लोग जो कहते हैं कि हैविन था, वो किस समय की बात है? सतयुग में क्या क्रिश्चियन्स होंगे? नहीं। फिर? (किसी ने कहा-संगमयुग की बात है) तो ज़रूर संगमयुग की ही ऐसी बात है, जिसमें क्रिश्चियन्स भी, 500 करोड़ की दुनियाँ में जो 100 (या 200) करोड़ क्रिश्चियन्स हैं, वो भी देखेंगे, अनुभव करेंगे कि इसी सृष्टि पर कोई हैविन या पैराडाइज़ है और लॉर्ड कृष्ण का अनुभव प्रैक्टिकल स्टेज में करेंगे।

तो बाप समझाते हैं -मेहनत बहुत करनी है। रोज़ अपना पोतामेल रखो -कौन-सी कर्मेंद्रिय ने हमको धोखा दिया? मुख भी बहुत धोखा देता है। आगे क्लास में कचहरी होती थी, सब अपनी-2 भूल बताते थे - हमने फलानी चीज़ छिपा करके खा ली। अच्छे-2 बड़े घर की बच्चियाँ बतलाय देती थीं। ऐसा-2 माया वार करती है। छिपाकर खाना ये भी, चोरी है। सो भी शिवबाबा के यज्ञ की चोरी, यह तो बहुत खराब है। 'कख का चोर सो लख का चोर'- पहले छोटी चोरी करेगा, फिर बाद में बड़ी चोरी भी कर सकता है। माया एकदम नाक से पकड़ती है; क्योंकि संस्कार पक्के होते जाते हैं। आदत बहुत बुरी है। बुरी आदतों को निकालना पड़ता है। अपने ऊपर फटकार डालनी चाहिए -हमारे में ऐसी बुरी आदत होगी तो हम क्या बनेंगे !स्वर्ग में जाना कोई बड़ी बात नहीं है; परन्तु उसमें फिर मर्तबा भी पाना है, हम ऊँच पद पावें। कहाँ राजा और कहाँ प्रजा !तो कितना फर्क हो जाता है।

तो कर्मेन्द्रियाँ भी बहुत धोखा देने वाली हैं। उनकी सम्भाल करनी चाहिए। कर्मेन्द्रियों ने धोखा दे दिया और हमारा कहीं फँसाव-लगाव हो गया और ज्ञान में से टूट पड़े अथवा बाप का नाम बदनाम कर दिया; क्योंकि इस यज्ञ में किसी का गुप्त तो कुछ भी रहेगा नहीं। तो पहले भी बाबा ने मुरली में बताया - •"इस यज्ञ में सबकी पोलपधरी हो जाएगी। जो बाबा को अपना पोतामेल दे देते हैं, वो तो ठीक; अगर नहीं देते हैं, छुपाते हैं, तो इस यज्ञ में किसी का कुछ छुपने वाला नहीं है। जिनको बहुत वो अपना समझते हैं, वही आत्माएँ फ्रण्ट में आ जाएँगी।

बताया -अपनी बहुत सम्भाल करनी चाहिए। ऊँच पद पाना है तो बाप के डायरैक्शन पर पूरा-2 चलना है। बाप डायरैक्शन देंगे, माया फिर बीच में आ करके विघ्न डालेगी। बाप डायरैक्शन देंगे !क्या अभी वाणी चल रही थी ब्रह्मा के मुख से, तब नहीं दे रहे थे? भविष्य के लिए इशारा क्यों किया? (किसी ने कुछ कहा.... - नहीं) भविष्य के लिए इशारा दिया, ज़रूर कोई और ऐसी-2 नई बातें निकलेंगी, जो बच्चों की बुद्धि में नहीं हैं और बाप डायरैक्शन देंगे। जो दूसरे धर्म के देहधारी धर्मगुरू हैं या दूसरे धर्म में कन्वर्ट होने वाली आत्माएँ हैं, उनके तो अनेक जन्मों के संस्कार पड़े हुए हैं उन धर्मों के संग के रंग के, व्यभिचारी धर्मों के संग के रंग के, वो अपनी गलती को महसूस नहीं करेंगी। तब क्या होगा? वो दूसरों के ऊपर भी अपनी बात थोपेंगी कि नहीं, हमने जो कुछ किया, सच्चा किया, ठीक किया; राँग नहीं! तो बाबा की बातों का अपोजिशन होगा; इसलिए बाबा ने बोला कि बाप डायरैक्शन देंगे, माया फिर बीच में आ करके विघ्न डालेगी। इसलिए माया को बेटी कहते हैं। माया को बाप क्या कहते हैं? ये हमारी बेटी है।

बाप कहते हैं -भूलो मत! नहीं तो अंत में बहुत पछताएँगे। क्या नहीं भूलो? माया के रूप को भी जानो और मुझे भी पहचानो, मेरे डायरैक्शन को भी जानो। मेरा डायरैक्शन -‘योगी बनो, पवित्र बनो’। सबसे पहले कौन-सी इन्द्रिय को पवित्र बनाना है? क्रिमिनल आई जो है, उसको सिविल आई बनाना है। ऐसी प्रैक्टिस नहीं करो, जिससे आत्मा की सिविल चक्षु जो बननी चाहिए, वो और ही क्रिमिनल आई बन जाए; नहीं तो बहुत पछताएँगे। नापास होने का फिर साक्षात्कार भी होगा कि देखो, हमने ये डायरैक्शन दिया, कितना समझाया, फिर भी तुमने नहीं माना, देहधारी गुरुओं की मत पर चले। अभी तुम कहते हो -हम नर से नारायण बनेंगे। लक्ष्य तुम्हारा कितना ऊँचा है! क्या बनेंगे? नर से नारायण बनेंगे और नारायण-नारायणी की स्टेज क्या होगी? कोई दूसरे में आँख डूबेगी क्या? संगमयुगी लक्ष्मी-नारायण की तो और भी ऊँची स्टेज दिखाई गई है। लक्ष्मी-नारायण के पुराने चित्र में, जो साक्षात्कार से बाबा ने बनवाया, उसमें ध्यान से देखो, राधा-कृष्ण फिर भी एक-दूसरे को देख रहे हैं और लक्ष्मी-नारायण तो एक-दूसरे को देख भी नहीं रहे हैं, दृष्टि मात्र से भी; सिर्फ वायब्रेशन से ही उनकी प्रीत की कैचिंग हो रही है। तो उनका तो वायब्रेशन भी अव्यभिचारी। इतनी श्रेष्ठ स्टेज होगी। तो लक्ष्य रखा हुआ है कि हम लक्ष्मी-नारायण बनेंगे और कर्म क्या करते? आँख से व्यभिचारी बनने की प्रैक्टिस करते !

तो नापास होने का भी साक्षात्कार होगा कि क्यों नापास हुए; परन्तु अपने से पूछो, पोतामेल निकालो। बहुत हैं जो मुश्किल समझ करके अमल में नहीं लाते हैं; परन्तु बाबा कहते हैं -इससे तुम्हारी उन्नति बहुत होगी। सारे दिन का पोतामेल निकालना चाहिए। यह आँखें बहुत धोखा देती हैं। कोई को देखेंगे तो ख्याल आएगा -यह तो बहुत अच्छी है। फिर बात करेंगे, दिल होगी इनको कुछ सौगात दे दूँ, यह चीज़ खिलाऊँ, वही चिन्तन चलता रहेगा।

8 रत्न ही पास विद् ऑनर निकलते हैं, माला भी 8 रत्नों की मुख्य गाई जाती है। 8 ही पूरे सिविल आई बनेंगे। कोई पर ग्रहचारी बैठती है तो रत्न की मुदरी आदि बना करके पहनते हैं। करोड़ों पुरुषार्थ करने वालों में से 8 पास विद् ऑनर्स निकलेंगे। मुदरी में कितने होते हैं रत्न? नौ रत्न; लेकिन उसमें पास विद् ऑनर कितने होते हैं? आठ; और नौवाँ? नौवाँ है वैल्युलेस और जो फर्स्ट है, वो है हीरो, हीरा। तो नौवाँ क्यों रखा गया है? ताकि दूसरों की वैल्यु का पता पड़े। 8 बहुत मशहूर हैं।

बच्चे समझते हैं -मेहनत बहुत बड़ी है। कर्मेन्द्रियाँ कितना धोखा देती हैं। रावण-राज्य है ना! बाप कहते हैं -वहाँ चिन्ता की कोई बात नहीं होती; क्योंकि वहाँ रावण-राज्य नहीं होता है, चिन्ता की बात ही नहीं। वहाँ भी चिन्ता हो, तो फिर नर्क और स्वर्ग में फर्क क्या रहा !

तुम बच्चे बहुत-2 ऊँच पद पाने के लिए भगवान से पढ़ते हो। क्या कहा? (किसी ने कुछ कहा) हाँ, जो डायरैक्ट भगवान से सम्मुख बैठकर पढ़ते हैं, उनसे जास्ती ऊँच पद और किसी का होता नहीं है।

बाप समझाते हैं -माया निन्दा कराती है, मैं आ करके उपकार करता हूँ। तुमने अपकार किया है; मैं उपकार करता हूँ।

कुदृष्टि रखने से अपना ही नुकसान करेंगे। बहुत बड़ी मंज़िल है। इसलिए बाबा कहते हैं - अपना पोतामेल देखो, कोई विकर्म तो नहीं किया? विकर्म माना? वि माना विपरीत, कर्म माना कर्म। किससे विपरीत कर्म? जो बाबा मत देते हैं, उस मत के विपरीत कोई कर्म किया; चाहे आँख से, चाहे किसी दूसरी कर्मेन्द्रिय से, तो वो क्या बन जाता है? विकर्म बन जाता है। किसको धोखा तो नहीं दिया?

अब विकर्माजीत बनना है। विकर्माजीत के संवत् का किसको भी पता नहीं है, सिवाय तुम बच्चों के। ये विकर्माजीत का संवत् कब से शुरू होगा? डेट क्या बताई? संवत् 1-1-1। तो तुम बच्चों को पता है। बाप ने समझाया है विकर्माजीत को हुए 5000 वर्ष हुए। फिर विकर्म करते हैं तो वाममार्ग में चले जाते हैं। दाएँ मार्ग में नहीं, कैसे मार्ग में? वाममार्ग में, बाएँ हाथ की तरफ। झाड़ में डालियाँ हैं ना !कुछ डालियाँ हैं भारत की ओर, दाएँ हाथ की ओर और कुछ डालियाँ हैं बाएँ हाथ (विदेशों) की ओर। तो जो बाएँ ओर की डालियाँ हैं, वो हैं सब विधर्मी डालियाँ, व्यभिचार को पोषण करने वाले धर्मों की डालियाँ। उनमें खुली छूट है, अच्छा माना जाता है -बार-2 डायवोर्स दो और बार-2 नई शादी और ज़्यादा-से-ज़्यादा बच्चे पैदा करो। कोई-2 देशों में इनाम भी मिलता है। तो वो धर्म हैं व्यभिचार को पोषण करने वाले और भारतीय धर्म जितने भी हैं -बौद्धी धर्म, संन्यास धर्म, सिक्ख धर्म -सिक्ख धर्म में भी माना जाता है -‘एक नारी सदा ब्रह्मचारी।’ या आर्यसमाज, जितने भी धर्म हैं, वो सब (...)

तो बाप ने तुम बच्चों को समझाया है -कर्म-अकर्म-विकर्म की गति क्या है? ये अक्षर तो हैं ना! कर्म कैसे बनता है, अकर्म कैसे बनता है और विकर्म, विपरीत कर्म कैसे बनता है। कैसे बनता है? श्रीमत के अनुकूल बाप की याद में रहकर जो कर्म किए जाते हैं, वो कर्म बनते हैं, जिन्हें सुकर्म भी कह सकते हैं और अकर्म कब बनते हैं? सिर्फ बाप की याद है, कोई संकल्प नहीं, निःसंकल्पी स्टेज, अच्छा संकल्प भी नहीं, बुरा संकल्प भी नहीं; सिर्फ बीजरूप बिंदु की स्टेज और ऐसी स्टेज में स्थिर हो करके जो कर्म किए जाते हैं, वो अकर्म हो जाते हैं। ये देवताओं की भी स्थिति होती है। देवताएँ भी वहाँ आत्मिक स्थिति में स्थित रहेंगे, कर्म करते हुए उनके कोई संकल्प नहीं चलेंगे, तो रिज़ल्ट नहीं आएगा और विकर्म, विपरीत कर्म (कैसे बन जाते हैं)? देहभान में रहकर जो भी कर्म किए जाते हैं, वो सब विकर्म बन जाते। माया के राज्य में मनुष्य जो भी कर्म करते हैं, वह कर्म, विकर्म ही बनते हैं।

सतयुग में विकार होता नहीं है, तो विकर्म भी कोई बनता नहीं। यह भी तुम जानते हो; क्योंकि तुमको ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है। तुम किस बाप के बच्चे हो? तुम हो त्रिनेत्री बाप के बच्चे। तो तुमको तीसरा नेत्र मिला हुआ है। तुम त्रिनेत्री बने हुए हो। तो त्रिकालदर्शी, त्रिनेत्री बनाने वाला है बाप। तुम आस्तिक बने हो, सब त्रिकालदर्शी, त्रिनेत्री बने हो। सारे ड्रामा का राज़ तुम्हारी बुद्धि में है -मूलवतन, सूक्ष्मवतन, स्थूलवतन, 84 का चक्र, फिर और-2 धर्म वृद्धि को कैसे पाते हैं।

वो कोई सद्गति नहीं कर सकते। कौन? और धर्मों के धर्मपिताएँ या और धर्मों में कन्वर्ट होने वाली, कम जन्म लेने वाली आत्माएँ, जो पूरे 84 जन्म नहीं लेतीं, 83 जन्म लेती हैं, 82 जन्म लेती हैं, सोलह कला सम्पूर्ण पक्के देवता नहीं बनते, तो वो कोई सद्गति नहीं कर सकते। क्यों? जो खुद ही चौथाई कला, आधी कला की दुर्गति में इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर आया, वो दूसरों की सद्गति कैसे करेगा? सेकण्ड नारायण, थर्ड नारायण -ये दुर्गति वाले कहे जाएँगे या सद्गति वाले कहे जाएँगे? (किसी ने कुछ कहा) ...-क्योंकि आधा कला, चौथाई कला इनकी दुर्गति होती है। भल नारायण तो बनेंगे; लेकिन (16 कला) सम्पूर्ण नारायण नहीं बनेंगे। तो पूजा किसकी होती है? सम्पूर्ण नारायण की पूजा होती है; अधूरे नारायणों की पूजा भारतवर्ष में नहीं होती। सात नारायणों की कहीं पूजा देखी? नहीं। सात नारायणों की पूजा नहीं होती है; लेकिन फर्स्ट नारायण की, सत्यनारायण की पूजा होती है, गायन होता है। तो वो कोई (कम कला वाले ना.) सद्गति नहीं कर सकते।

जिनकी बुद्धि में ये लक्ष्य है कि फर्स्ट नारायण तो ब्रह्मा बाबा बन गए, अब हम तो उतरती कला के नारायण बनेंगे, सेकिण्ड नारायण बनेंगे, थर्ड नारायण, फोर्थ, फिफ्थ, सिक्स्थ, सेवेन्थ, एट्थ नारायण बनेंगे। तो इससे क्या साबित हुआ? वो उतरती कला की कच्ची आत्माएँ हैं, जो डायरैक्ट बाप से वर्सा पाने वाली नहीं हैं। वो अपने माँ-बाप से स्वर्ग में वर्सा पाएँगी; लेकिन डायरैक्ट गॉडफादर जो आ करके वर्सा देते हैं इसी जन्म में पढ़ाई पढ़ाकर, वो वर्सा उनके नसीब में नहीं है।

उन्होंने इस जीवन में लक्ष्य लिया हुआ है कि हमको तो ब्रह्मा बाबा के बाद ही गद्दी पर बैठना है, इससे ऊँची गद्दी कोई दुनियाँ में होती नहीं है। तो उनकी बुद्धि में वो सतयुग की बादशाही का लक्ष्य बैठा हुआ है। वास्तव में, बाप विश्व की बादशाही देने आया है; सतयुग की बादशाही देने के लिए नहीं बताता। हमको लक्ष्य देता है -तुमको नर से नारायण बनना है इसी जन्म में; नर से प्रिन्स बनने का लक्ष्य हमको नहीं दिया। नर से प्रिन्स बनेंगे अगले जन्म में और नर से नारायण बनना है इसी जन्म में।(किसी ने कुछ कहा-...? ब्रह्मा भी नहीं बनते हैं नर से डायरैक्ट नारायण; लेकिन संगमयुग में दूसरे के तन में प्रवेश ज़रूर करते हैं। तो जिस तन में प्रवेश करके उन्होंने अनुभूति तो ले ली; इसलिए दो नारायण मंदिरों में गाए और पूजे जाते।

लक्ष्मी-नारायण के जो भी मंदिर बने हुए हैं -बिरला मंदिर हों या जे.के .मंदिर हों, उनमें दो प्रकार की मूर्तियाँ होती हैं। एक लक्ष्मी-नारायण की अलग मूर्ति रखी होगी और दूसरे कमरे में विष्णु की मूर्ति, जिसे नर-नारायण की मूर्ति कहते हैं, वो अलग रखी होगी। नर-नारायण की मूर्ति है संगमयुगी नारायण की यादगार और लक्ष्मी-नारायण की मूर्ति है, (16 कला) सतयुग में जो पद मिलेगा उनकी यादगार। दोनों ही आत्माएँ इसी समय अपनी यादगार कायम करती हैं।

तो उन दूसरे धर्मगुरुओं को अथवा उन दूसरे धर्मों में कन्वर्ट होने वाले नारायणों को गुरू भी नहीं कह सकते। क्यों, क्यों नहीं कह सकते गुरू? क्योंकि वो सद्गति नहीं करते हैं, तो क्या करेंगे? दुर्गति ही करेंगे, उल्टा ही रास्ता बताएँगे। योग की जगह क्या कराएँगे? खुद भोगी बनेंगे और दूसरों को भी भोगी बनाएँगे। सर्व की सद्गति करने वाला तो एक ही बाप है।

सबकी सद्गति होती है। निशानी क्या होती है सद्गति की? इसकी शुरुआत कहाँ से होती है? पहले शरीर की सद्गति होगी कि पहले आत्मा की सद्गति होगी? पहले मन-बुद्धि (वाली) आत्मा की सद्गति है। मन-बुद्धि (वाली) आत्मा की सद्गति की निशानी है कि जो आत्मा सद्गति की ओर जाएगी, उसका मनन-चिन्तन-मंथन चल पड़ेगा। जिसका मनन-चिन्तन-मंथन नहीं चलता है, तो समझो डिफेक्टेड/रोगी आत्मा है, पतन की ओर जाने वाली है; क्योंकि देह-अभिमान भरा रहता है। देह-अभिमान के कारण देह और देह के सम्बन्धी और देह की दुनियाँ के संकल्प ही चलते रहेंगे, सूक्ष्मवतनवासी फरिश्ता नहीं बन सकेंगे। फरिश्तों का काम है -ऊँची स्टेज में उड़ना, मनन-चिन्तन-मंथन, सर्विस के श्रेष्ठ खयालातों में रमण करना।

तो वो गुरू दुर्गति करने वाले हैं। वो कहेंगे -ज्ञान की गहराई में मत जाओ, ज्ञान का लेन-देन करना -ये कोई ज़रूरी नहीं है, बाबा को याद करो। अब बाबा(को) भी नहीं जानते, 'बाबा' किसे कहा जाता है और 'बाप' किसे कहा जाता है? इतना तो अन्तर कम-से-कम समझना चाहिए; जबकि बाबा ने मुरली में भी बता दिया कि मैं हूँ आत्माओं, बिन्दु-2 आत्माओं का बाप; मैं बाबा नहीं हूँ। बाबा कब बनता हूँ? जब शरीर में प्रवेश करता हूँ, तो "शरीर और आत्मा के मेल को 'बाबा'

कहा जाता है।'' (मु.9.3.89 पृ.1 मध्य) मुरली में भी डेफिनेशन दे दी, तो भी बुद्धि में नहीं बैठता। बाबा कहा जाता है ग्रैण्डफादर को। शिव ज्योतिबिन्दु सिर्फ आत्माओं का बाप है, बाप के अलावा कोई दूसरा सम्बंध नहीं बनता। तुम बच्चे भी आपस में भाई-भाई हो, भाई-बहन भी नहीं। वो (सदा शिव ज्योति) हमारा बाप और हम उसके बच्चे, भाई-भाई। ग्रैण्डफादर नहीं है। ग्रैण्डफादर जब बनता है, तो शरीर में आ करके बनता है, तब हम भाई-बहन भी बनते हैं, पौत्रे-पौत्रियाँ बनते हैं और पौत्रे-पौत्रियों को बाबा का/ग्रैण्डफादर का वर्सा मिलता है।

तो सबकी सद्गति होनी है। वह धर्मस्थापक कहे जाते हैं, वो गुरू नहीं हैं जो सद्गति करें। धर्म की स्थापना करेंगे, अपनी-2 धारणाओं की स्थापना कर देंगे; लेकिन आत्मा की सद्गति न अपनी कर सकेंगे और न दूसरों की कर सकेंगे। फिर भी धर्मस्थापक धर्म स्थापन करने के निमित्त बनते हैं; वो राजाई स्थापन नहीं करते, और-2 धर्मों का विनाश नहीं करते। ये कठिन काम उनके वश का नहीं है। क्या? पुरानी मान्यताओं का, पुरानी धारणाओं का, पुरानी रीतियों का, रसम-रिवाज़ों का विनाश करना उनके वश की बात नहीं है। इसके लिए तो मुकाबला करना पड़े। जैसे विष का घड़ा हो, उसमें विष रखा हुआ है और कोई ऊपर से दूध और डाल दे, क्या हो जाएगा? विष का विष ही रहेगा ना ! जब तक घड़ा पूरा खाली नहीं हुआ है, तब तक उसमें दूध ही रहे, विष का नाम-निशान न रहे, ये नहीं कहा जा सकता और बाप आ करके क्या करते हैं? पुरानेपन का विनाश कराते हैं। पुरानी दुनियाँ का विनाश और नई दुनियाँ की स्थापना फिर प्रत्यक्ष होगी। तो वो कोई सद्गति नहीं कर सकते। उनको याद करने से कोई सद्गति नहीं हो सकती है। किनको याद करने से? उन धर्मपिताओं को। यहाँ तो कोई धर्मपिताओं को याद नहीं करता ब्राह्मणों की दुनियाँ में। ब्राह्मणों की दुनियाँ में (यहाँ) कोई धर्मपिताओं को याद करता है क्या? नहीं। धर्मपिताओं की बात नहीं है, उन धर्मपिताओं के जो बीजरूप हैं अथवा जो आधारमूर्त हैं, जिन आधारमूर्तों के शरीरों के द्वारा वो ऊपर से आने वाले द्वापरयुगी या कलियुगी धर्मपिताएँ प्रत्यक्ष होते हैं, जिनके चित्र बने हुए हैं, वो शरीरधारी हैं कहाँ? अभी (यहाँ) ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनियाँ के अन्दर मौजूद हैं। तो उनकी तरफ बाबा का इशारा है कि उनको याद करने से कोई सद्गति नहीं हो सकती, विकर्म विनाश नहीं हो सकते। वो सब हैं भक्ति।

तो बाप समझाते हैं -माया बड़ी दुस्तर है। इस पर लड़ाई होती है। तुम हो 'शिवशक्ति पाण्डव सेना'। तुम पंडे हो, शान्तिधाम-सुखधाम का रास्ता बताते हो। हम गाइड्स हैं, कहते हैं - बाप को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। बाप की गाइडेन्स देते हो। बाप की तरफ हम गाइड करते हैं कि बाप के पास गति-सद्गति का रास्ता है, बाकी कोई सद्गति दे नहीं सकता और फिर दूसरी तरफ अगर कोई पाप, विकर्म करेंगे तो सौ गुणा पाप लग जावेगा। जितना हो सके कोई विकर्म न

करो। विकर्म करोगे तो मेरा नाम बदनाम कराएँगे। कहेंगे -ये गॉडली स्टूडेंट अपन को कहलाते हैं। तो जितना हो सके कोई विकर्म नहीं करना चाहिए।

कर्मेन्द्रियाँ धोखा बहुत देती हैं। बाप हरेक की चलन से समझ जाते हैं। बच्चों को माया के तूफान आते हैं। क्या? माया के तूफान आएँगे तो क्या होगा? बाप की याद ठहरेगी नहीं। तो बाप कैसे समझ जाते हैं? बाप हरेक की चलन को देखते हैं। बाप कोई जानी-जाननहार नहीं है; लेकिन एक्ट को देख करके, चलन को देख करके समझ जाते हैं, वाणी (कर्म) को देख करके, वाणी को सुन करके समझ जाते हैं -ये ऐसी-2 बातें करता है। तो हम तो शिवबाबा के बच्चे हैं। बाप से हमें अंजाम करके राखी बाँधनी चाहिए। फिर भी माया धोखा दे देती है, फिर तो छूट नहीं सकते।

कर्मेन्द्रियाँ जब तक वश में नहीं होतीं, तो कर्मातीत अवस्था कैसे हो सकेगी? कहना तो सहज है -हम लक्ष्मी-नारायण बनेंगे; परन्तु लक्ष्मी-नारायण बनने के लिए समझ भी तो चाहिए ना। इसलिए वाणी में क्या बोला? दो बातें बोल दीं •"लक्ष्मी-नारायण तो बुद्धू हैं।" (मु॰17.4.71 पृ॰3 अंत) फिर क्या बोला? •"लक्ष्मी-नारायण तो समझदार हैं, तब तो विश्व के मालिक बनते हैं।"(मु॰29.7.70 पृ॰3 मध्यादि) तो लक्ष्मी-नारायण बुद्धू हुए/समझदार हुए? (किसी ने कुछ कहा) ज़रूर बाबा कोई दो बातें नहीं करते हैं। जो सतयुग के लक्ष्मी-नारायण होंगे, वो बुद्धू होंगे और यहाँ बाप से वर्सा ले करके डायरैक्ट जो लक्ष्मी-नारायण बनते हैं, नर से नारायण बनते हैं, वो तो समझदार ही होने चाहिए, मनन-चितन-मंथन करने वाली (पु.संगमयुगी) फर्स्ट आत्मा होनी चाहिए; क्योंकि ये शास्त्रों का मिसाल है -सागर-मंथन हुआ और उसमें से रत्न निकले। तो ज़्यादा रत्नों का अधिकारी कौन बनेगा? जो ज़्यादा-से-ज़्यादा विचार-सागर-मंथन करेगा, वो उतने ही रत्नों का अधिकारी बनेगा; क्योंकि अपनी घोंट तो नशा चढ़े। तो समझ भी तो चाहिए ना !लक्ष्मी-नारायण बनेंगे -ये तो सब कह देते हैं। बाप कहते हैं - डायरैक्शन पर अमल करो, बाबा-2 करते रहो। बाबा से हम पूरा ही वर्सा लेंगे। ऐसा टीचर कब भी कहाँ मिलेगा नहीं। इन सब बातों को देवताएँ भी नहीं जानते हैं, तो पिछाड़ी के धर्म वाले फिर कैसे जान सकते हैं !यह सृष्टि के आदि-मध्य-अंत का ज्ञान सिर्फ अभी तुम ही जानते हो, फिर तो मैं ही लोप हो जाता हूँ।

बाबा कहते हैं -मैं कुछ कहूँ तो भी समझो -यह शिवबाबा कहते हैं। ये कौन-से बाबा ने कहा? (किसी ने कहा-ब्रह्मा बाबा) जिस रथ का आधार लिया, वो भी तो बूढ़ा तन था ना !तो बूढ़ा होने के नाते, उसको भी क्या कहा? 'बाबा'। बूढ़े को भी बाबा कहा जाता है। ब्रह्मा को कोई ग्रैण्डफादर नहीं कहेंगे; क्योंकि मुरली में तो प्रश्न किया है •"ब्रह्मा भी किसका बच्चा है? शिवबाबा का बच्चा है।" (मु॰14.5.72 पृ॰2 अंत) तो जब शिवबाबा का बच्चा हो गया, तो ग्रैण्डफादर कहाँ हुआ? तो बूढ़े होने की वजह से उनको बाबा कहा गया। तो ये बाबा कहते हैं -मैं कुछ कहूँ तो भी समझो, ये शिवबाबा कहते हैं। तुम्हारी बुद्धि में ये नहीं आना चाहिए कि हम ब्रह्मा से सुनते हैं।

किससे सुनते हैं? शिवबाबा से सुनते। शिवबाबा ही याद रहे। ऐसे मत समझो -यह कहते हैं। यह तो उनका (टेम्परेरी) रथ है। यह क्या करता है? (किसी ने कहा-कुछ भी नहीं)

तुम बच्चों को तो राजाई मैं देता हूँ। क्या? माना ये तन के द्वारा तुमको राजाई का वर्सा नहीं मिलता, कर्मेन्द्रियों के ऊपर कण्ट्रोलिग पावर इस रथ के द्वारा तुमको नहीं मिलेगी। यहाँ संगमयुग में जो कर्मेन्द्रियों के राजा बनते हैं, वही सतयुग में जाकर स्थूल राजाई भी प्राप्त कर सकेंगे और इस विश्व की भी बादशाही प्राप्त कर सकेंगे। तो इस (ब्रह्मा-) तन के द्वारा मैं राजाई नहीं देता हूँ। किस तन के द्वारा? ब्रह्मा द्वारा। ब्रह्मा द्वारा फिर कौन-सा धर्म स्थापन हुआ? ब्राह्मण धर्म स्थापन हुआ; देवता या क्षत्रिय धर्म स्थापन नहीं होता, सूर्यवंशी-चंद्रवंशी धर्म स्थापन नहीं हुआ। तो यह थोड़े ही तुमको राजाई देता है। इन्होंने ब्रैकेट में दे दिया है 'रथ'। बात तो सही है, इस रथ के द्वारा तुमको कोई विश्व की बादशाही, राजाई नहीं मिलती है। यह तो बिल्कुल पेनीलेस बेगर है। यह भी बाबा से वर्सा लेता है। कौन-सा वर्सा? कर्मेन्द्रियों के ऊपर कण्ट्रोलिग पावर ये भी किससे लेता है? (शिव) बाबा से, जो बाबा राजयोग सिखाने वाला है। राजयोग सिखाने वाले प्रवृत्तिमार्ग के होने चाहिए या निवृत्तिमार्ग के? मुरली में तो बोला है •"निवृत्तिमार्ग वाले प्रवृत्तिमार्ग वालों को राजयोग नहीं सिखाय सकते।" (मु॰20.1.74 पृ॰4 मध्यादि) तो यहाँ सिखाने वाला कैसा होना चाहिए? (किसी ने कहा-प्रवृत्तिमार्ग वाला) इसलिए बोला कि समझते नहीं हैं कि बाप ने प्रवृत्ति में रह करके राजयोग सिखाया है। ब्रह्मा-सरस्वती की कोई प्रवृत्ति नहीं थी। क्यों? क्योंकि सरस्वती तो उनकी बेटी थी। वो 14 साल की आई यज्ञ में और वो 60 साल के, तो वो कोई जोड़ी शोभती नहीं है।

तो ये भी बाबा से वर्सा लेता है। कौन? ये ब्रह्मा भी। किससे वर्सा लेता है, शरीर तो छूट गया! ज़रूर वो ब्रह्मा की सोल कोई ब्राह्मण बच्चे में प्रवेश करके फिर से बाबा की पढ़ाई पढ़ती है। जैसे तुम पुरुषार्थ करते हो वैसे यह भी करता है। यह भी स्टूडेण्ट लाइफ में है।

यह रथ लोन पर लिया हुआ है। क्या? लोन पर लिया हुआ टेम्पररी हुआ या मुकर्रर रथ हुआ? टेम्पररी है।• "जो अपनी चीज़ होती है, उसको चाहे जैसे यूज़ करो, कोई कुछ नहीं कर सकता और लोन पर लिया हुआ/किराए पर लिया हुआ मकान, हम जैसे चाहे वैसे कार्यों में नहीं लगाय सकते।" (अ॰वा॰5.4.83 पृ॰118 मध्य) तो रथ लोन पर लिया हुआ है, ये (ब्रह्मा का) रथ लोन लिया हुआ है, (यह भी) तमोप्रधान है।

तुम पूज्य देवता बनने के लिए, मनुष्य से देवता बनने के लिए पढ़ते हो। क्या, तुम क्या बनते हो? मनुष्य से देवता (यहाँ ही) बनते हो। देवताएँ कलियुग में थोड़े ही होंगे। यहाँ मनुष्य-सृष्टि है, अनेक धर्म हैं। तुम बच्चे इन बातों को समझते हो। कोई की तकदीर में नहीं है तो कहते हैं -हमें तो संशय आता है -शिवबाबा कैसे आ करके पढ़ाते हैं, मुझे तो समझ में नहीं आता।

बाप की याद बिगर विकर्म विनाश नहीं हो सकते, पूरी सज़ा खानी पड़ेगी। यह राजाई स्थापन हो रही है। राजाओं को कितनी दासियाँ होती हैं? ढेर दास-दासियाँ होते हैं। बाबा तो राजाओं के कनेक्शन में आया हुआ है। दासियाँ दहेज में देते हैं। यहाँ ही इतनी दासियाँ हैं तो सतयुग में कितनी दासियाँ होंगी! जब कलियुग में जो राजाएँ हैं, उनको इतने दास-दासियाँ होते हैं, तो सतयुग में राधा-कृष्ण को कितनी दासियाँ होंगी, जब उनका स्वयंवर होगा! यह भी राजधानी स्थापन हो रही है ना! बाबा जानते हैं -क्या-2 कर रहे हैं। कौन? जो दास-दासियाँ बनने वाले हैं, वो क्या-2 कर रहे हैं।

हर एक के पोतामेल से बाबा बतलाय सकते हैं -इस समय अगर मर जाएँ तो क्या बनेंगे? कर्मातीत अवस्था को पिछाड़ी में सब नम्बरवार पाते हैं। तो यह कमाई है। कमाई में मनुष्य कितना बिज़ी रहते हैं -खाना खाते रहेंगे, टेलिफोन कान पर लगा रहेगा।(किसी ने कुछ कहा) ऐसा होता है कभी? ऐसे नहीं होता! ऐसे आदमी तो कब ज्ञान उठा नहीं सकें। क्या? कि इतने फँसे हुए हैं, दुनियाँवी धन्धा-धोरी में कि खाना खाने की भी फुर्सत नहीं। बाबा को कैसे याद करेंगे! बाबा ने कहा -खाना खाते समय तो ज़रूर बाबा की याद होनी चाहिए। ऐसे आदमी जो धन्धा-धोरी में इतने फँसे हुए हैं, वो ज्ञान नहीं उठाय सकेंगे। यहाँ गरीब, साधारण ही आते हैं। ऐसे नहीं आते जिनका इतना कारोबार फैला हुआ हो, जो खाना खाने की भी उनको फुर्सत नहीं हो। कौन-सी दुनियाँ की बात है, बाहर की दुनियाँ की? ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनियाँ की ही बातें बताय रहे हैं। ऐसी आत्माएँ ये बाप की एडवांस नॉलेज उठाय नहीं सकेंगी। साहुकार लोग तो कहेंगे -फुर्सत कहाँ है। बाप कहते हैं -अरे! सिर्फ बाप को याद करो तो विकर्म विनाश हो जाएँ।

तो बाबा मीठे-2 बच्चों को बार-2 समझाते हैं। हरेक को यह पैगाम देना है। कैसे बच्चों को समझाते हैं? मीठे। जो कड़ुवे बन जाते हैं, उन बच्चों को नहीं समझाते हैं। कड़ुवे बनने का भी अनुभव हो, जो ऐसा कोई न कहे कि हमको क्या पता, शिवबाबा आया हुआ है! यह चित्र भी तुम दिखाय सकते हो। किसका चित्र? शिवलिंग का चित्र दिखाय सकते हैं कि ये शिवबाबा आया हुआ है? बिन्दु फुदक-2 के आएगा क्या कि शिवलिंग आएगा लुढ़क-2 के? हाँ, बोला ना! हरेक को पैगाम देना है, जो ऐसा कोई न कह सके कि हमको क्या पता -शिवबाबा आया हुआ है! तो कैसे आएगा? ज़रूर तन में आएगा ना। वो तो बिन्दु है। बिन्दु तो छोटा रूप है, फिर बड़े रूप को क्यों मंदिरों में रखा गया है? पूजा करने के लिए, श्रद्धा-विश्वास व्यक्त करने के लिए, भावना को व्यक्त करने के लिए। श्रद्धा-विश्वास-भावना अच्छी चीज़ है; लेकिन अंधश्रद्धा-अंधविश्वास, ये अच्छी चीज़ नहीं है। तो शिव ज्योतिबिन्दु बिना शरीर के प्रत्यक्ष नहीं हो सकता; इसलिए बाप इस तन द्वारा कहते हैं, मुरली में क्या आता है? बाप इस तन द्वारा कहते हैं कि मुझे याद करो। कैसे याद करो? निवृत्तिमार्ग की याद भी नहीं। सिर्फ आत्मा -ये भी निवृत्ति है; सिर्फ शरीर ब्रह्मा का याद कर लिया -

ये भी निवृत्ति है। क्या करना है? आत्मा भी याद हो, तो शरीर भी याद हो और शरीर भी कोई जड़ नहीं, पास्ट में कोई ऐसा शरीर हो गया हो, जो शरीर छोड़ चुका, तो मरे हुए मुर्दे को याद करने की बात नहीं है। बाप तो इसमें प्रैक्टिकल में, इस संगमयुग में आ करके हमको विश्व की बादशाही देता है, राजधानी स्थापन करता है।

और किसी मनुष्यमात्र में, धर्मपिता में ये ताकत नहीं है, जो सब राज्यों का, सब धर्मों का विनाश करे और एक सत् धर्म की और एक अच्छे राज्य की स्थापना करे, राजधानी स्थापन करके जाए। शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा कहते हैं -मैं यह धर्म स्थापन कर रहा हूँ। कौन-सा धर्म, किस तरफ इशारा किया? ये धर्म माना कौन-सा धर्म? देवी-देवता सनातन धर्म। मैं देवी-देवता सनातन धर्म स्थापन कर रहा हूँ।

प्रजापिता ब्रह्मा भी सबका बाप है। सबका माना? 500 करोड़ मनुष्य-आत्माएँ सब अंजाम करेंगी कि ये हमारा बाप है। इसलिए हर धर्म में उस बाप की मान्यता है। कोई धर्म ऐसा नहीं है, जो सृष्टि के आदि पुरुष को नहीं मानता हो। अँग्रेज़ लोग किसे मानते हैं? एडम को। मुसलमान लोग किसे मानते हैं? आदम को। जैनी लोग किसे मानते हैं? आदिनाथ को और हिन्दू लोग 'त्वमादिदेवः पुरुषः पुराणः' (गीता 11/38)- पुरातन पुरुष तुम हो; इसलिए उसकी मूर्तियाँ बनाई हुई हैं। जो गाँव-2 में, शहर-2 में, भारतवर्ष में और विदेशों में खुदाइयाँ हुई हैं, तो ज़्यादा-से-ज़्यादा तादाद में वो नग्न मूर्तियाँ शंकर की मिली हैं, जिसको जैनी लोग तीर्थंकर की मूर्तियाँ कहते हैं। वो सबका बाप है।

बाप ने समझाया है -यह लड़ाई कल्प-2 लगी है। इनसे ही स्वर्ग स्थापन होता है। कौन-सी लड़ाई से? 'गेट वे टू हैविन इज़ महाभारत'। ये महाभारी महाभारत गृहयुद्ध है। कौन-से गृह का, कौन-से घर-परिवार का युद्ध है? ये ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनियाँ के घर-परिवार का युद्ध है। ये धर्मयुद्ध जब तक नहीं होगा तब तक स्वर्ग के गेट खुल नहीं सकेंगे और जब तक स्वर्ग के गेट नहीं खुल सकेंगे, तब तक हम ब्राह्मणों का काम पूरा नहीं होगा। इनसे स्वर्ग की स्थापना होती है। लड़ाई किससे है? हमारी लड़ाई किससे है? ऐसे नहीं कि कौरव-पाण्डव आपस में लड़ते हैं। क्या? जो पाण्डव हैं, उनको किसी से वाचा का युद्ध भी करने की दरकार नहीं, कोई वाद-विवाद किसी से करने की दरकार नहीं। कोई सुनना चाहता है प्यार से तो सुनाओ; देखते हो कि इनकी आँखें लाल-पीली हो रही हैं तो सुनाना बंद कर दो; इसलिए बाबा ने सीधा-2 बताय दिया - • "त्रिमूर्ति के चित्र पर बाप का परिचय दो। अगर बुद्धि में बैठता है, तो आगे बताओ; बुद्धि में नहीं बैठता है, तो आगे समझाने से कोई फायदा नहीं, छोड़ दो।" (मु.5.11.71 पृ.1 अंत) तो कौरव-पाण्डव आपस में नहीं लड़ते। लड़ाई किससे है हमारी? हमारी लड़ाई है माया-रावण से। (5 विकारों की) माया को

बाप बेटी कहते हैं। तो रावण कौन हुआ? माया और रावण की जोड़ी हो गई ना! जैसे लक्ष्मी-नारायण की जोड़ी।

तो बस, सारा दिन बाबा-2 ही कहते रहो। कई बच्चियाँ बहुत याद करती हैं, शिवबाबा कहने से ही कई बच्चों को प्रेम के आँसू आ जाते हैं -कब जा करके मिलूँगी। कहाँ की बात? कब जाके मिलूँगी, कहाँ मिलूँगी -सूक्ष्मवतन में कि मूलवतन में? ज़रूर इस साकार सृष्टि की बात है। तुम संग बैठूँ, तुम संग खाऊँ, तुम संग सोऊँ, तुम संग हर कर्म की प्रीति निभाऊँ। तो ये गायन जो शास्त्रों में भी हैं, वो किस समय के गायन हैं? इस समय के प्रैक्टिकल पार्ट के गायन हैं। उन बाँधेलियों ने देखा नहीं है तो भी तड़पती रहती हैं। बिना देखे पहचान लेती हैं क्या? (ओमशांति)

Contact Us

Address

A-351-352, Vijayvihar, Phase-1, Rithala, Delhi- 110085

Mobile - 9891370007, 9311161007

Email - a11spiritual1@gmail.com

Website – WWW.PBKS.INFO/ADHYATMIK-VIDYALAYA.COM

Youtube – ADHYATMIK-VIDYALAYA OR AIVV

@A1SPIRITUALUNIVERSITY

Twitter - @adhyatmikaivv

Instagram - @adhyatmikvidyalaya

Linkedin – linkedin.com/company/adhyatmik-vidyalaya

01.01.2025